



लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और राष्ट्रीय सुरक्षा: परंपरागत एवं गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया की भूमिका

दीपा सिंह

शोधार्थी

लखनऊ विश्वविद्यालय

deepasinghrmp44@gmail.com

<https://doi.org/10.5281/zenodo.20526959>

सार

सार लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि यह शासन, समाज और नागरिकों के बीच सेतु का कार्य करता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, विशेषकर तब जब देश परंपरागत एवं गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा हो। परंपरागत चुनौतियों में आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, सीमा पार घुसपैठ और सांप्रदायिक तनाव शामिल हैं, जबकि गैर-परंपरागत चुनौतियों में साइबर अपराध, फेक न्यूज, सूचना युद्ध, कट्टरपंथी विचारधाराओं का प्रसार, जैविक खतरे और आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ आती हैं। मीडिया इन चुनौतियों के प्रति जन-जागरूकता फैलाने, तथ्यपरक जानकारी उपलब्ध कराने तथा सरकार की नीतियों और सुरक्षा एजेंसियों की गतिविधियों पर निगरानी रखने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाता है। स्वतंत्र और जिम्मेदार मीडिया पारदर्शिता, जवाबदेही और लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है, जिससे राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को बल मिलता है। साथ ही, मीडिया संकट के समय संयमित रिपोर्टिंग द्वारा अफवाहों और दुष्प्रचार को रोकने में सहायक सिद्ध हो सकता है। हालाँकि, टीआरपी की दौड़, सनसनीखेज प्रस्तुति और अपुष्ट सूचनाओं का प्रसार राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। अतः मीडिया को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी का भी पालन करना चाहिए। निष्कर्षतः, लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया की संतुलित, संवेदनशील और राष्ट्रहितपरक भूमिका ही परंपरागत एवं गैर-परंपरागत सुरक्षा चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने में सहायक हो सकती है।

परिचय

लोकतंत्र की सफलता केवल स्वतंत्र और निष्पक्ष शासन प्रणाली पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि यह एक जागरूक, सूचित और सक्रिय नागरिक समाज पर भी आधारित होती है। इस संदर्भ में मीडिया



को लोकतंत्र का 'चौथा स्तंभ' कहा जाता है, क्योंकि यह विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद समाज का वह सशक्त माध्यम है, जो शासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करता है। मीडिया न केवल सूचनाओं का संप्रेषण करता है, बल्कि जनमत का निर्माण, सामाजिक चेतना का विकास तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षण भी करता है। आधुनिक युग में, जब विश्व तीव्र वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और डिजिटल परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, मीडिया की भूमिका और अधिक व्यापक, जटिल एवं प्रभावशाली हो गई है। राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। यह केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक सद्भाव, आर्थिक सुरक्षा, सांस्कृतिक पहचान और वैचारिक स्वतंत्रता का संरक्षण भी शामिल है। परंपरागत रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा को सैन्य शक्ति, सीमाई सुरक्षा और आंतरिक कानून-व्यवस्था के दृष्टिकोण से देखा जाता रहा है, किंतु इक्कीसवीं सदी में इसके आयाम अत्यंत विस्तृत हो गए हैं। आज राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा में आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, अलगाववाद, संगठित अपराध, साइबर अपराध, सूचना युद्ध, जैविक खतरे, पर्यावरणीय संकट, आर्थिक अस्थिरता तथा सामाजिक विभाजन जैसे विविध तत्व शामिल हो चुके हैं।

इन सभी चुनौतियों के बीच मीडिया की भूमिका अत्यंत संवेदनशील, जिम्मेदार और निर्णायक हो जाती है। मीडिया जहाँ एक ओर जनसाधारण को सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर जागरूक करता है, वहीं दूसरी ओर सरकारी नीतियों, सुरक्षा एजेंसियों की कार्यप्रणाली और प्रशासनिक निर्णयों पर निगरानी रखकर लोकतांत्रिक जवाबदेही सुनिश्चित करता है। इस प्रकार मीडिया लोकतंत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और विविधतापूर्ण देश में मीडिया की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत की सामाजिक संरचना, धार्मिक विविधता, क्षेत्रीय असमानताएँ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ऐसी हैं, जहाँ आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ बहुआयामी स्वरूप धारण कर लेती हैं। आतंकवाद, सीमा पार घुसपैठ, वामपंथी उग्रवाद, सांप्रदायिक तनाव, जातीय संघर्ष, क्षेत्रीय अलगाववाद और हाल के वर्षों में साइबर अपराध एवं फेक न्यूज जैसी समस्याएँ भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। इन परिस्थितियों में मीडिया न केवल सूचनाओं का वाहक है, बल्कि वह सामाजिक एकता, राष्ट्रीय चेतना और लोकतांत्रिक स्थिरता का संरक्षक भी है।

लोकतंत्र में मीडिया का प्रमुख दायित्व सत्ता के केंद्रों पर निगरानी रखना और जनहित के मुद्दों को उजागर करना है। यह कार्य मीडिया को 'वाँचडॉग' की भूमिका प्रदान करता है। जब मीडिया स्वतंत्र,



निष्पक्ष और जिम्मेदार ढंग से कार्य करता है, तब वह भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग, मानवाधिकार हनन और प्रशासनिक विफलताओं को उजागर कर लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाता है। राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी मीडिया का यही दायित्व होता है कि वह तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग के माध्यम से नागरिकों को सही जानकारी प्रदान करे, ताकि वे अफवाहों, दुष्प्रचार और भय के वातावरण से मुक्त रह सकें। परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों की बात करें तो इनमें आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिक हिंसा, सीमा पार से होने वाली घुसपैठ, मादक पदार्थों की तस्करी और संगठित अपराध प्रमुख हैं। इन सभी समस्याओं का सीधा प्रभाव न केवल देश की सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ता है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने और आर्थिक विकास पर भी पड़ता है। मीडिया इन मुद्दों को उजागर कर सरकार और सुरक्षा एजेंसियों को सजग बनाता है, साथ ही जनता में जागरूकता फैलाकर सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है। उदाहरणस्वरूप, आतंकवादी घटनाओं की निष्पक्ष और संतुलित रिपोर्टिंग जनता को सही तथ्यों से अवगत कराती है और अफवाहों से उत्पन्न भय एवं अस्थिरता को नियंत्रित करती है।

वहीं दूसरी ओर, गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ आधुनिक तकनीकी और वैश्विक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप उभरी हैं। इनमें साइबर आतंकवाद, सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाला दुष्प्रचार, फेक न्यूज, डिजिटल जासूसी, डेटा चोरी, वैचारिक कट्टरता का ऑनलाइन प्रसार और सूचना युद्ध प्रमुख हैं। डिजिटल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म ने सूचना के प्रवाह को अत्यंत तीव्र बना दिया है, जिससे एक ओर लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ावा मिला है, वहीं दूसरी ओर असत्य और भ्रामक सूचनाओं का प्रसार भी आसान हो गया है। इस संदर्भ में मीडिया की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है कि वह तथ्यों की पुष्टि कर ही समाचार प्रस्तुत करे और समाज में विवेकपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करे। फेक न्यूज और दुष्प्रचार आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे बन चुके हैं। भ्रामक सूचनाएँ सांप्रदायिक तनाव, सामाजिक विभाजन और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकती हैं। कई बार ये सूचनाएँ विदेशी ताकतों या असामाजिक तत्वों द्वारा सुनियोजित ढंग से प्रसारित की जाती हैं, जिनका उद्देश्य देश की आंतरिक स्थिरता को कमजोर करना होता है। ऐसे में मीडिया की भूमिका एक प्रहरी की तरह होती है, जो सत्य और असत्य के बीच अंतर स्पष्ट कर समाज को सही दिशा प्रदान करता है। तथ्यों पर आधारित रिपोर्टिंग, तथ्य-जांच (फैक्ट-चेकिंग) और जिम्मेदार संपादकीय नीति के माध्यम से मीडिया इन खतरों को काफी हद तक नियंत्रित कर सकता है।

मीडिया का प्रभाव केवल समाचार संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनमत निर्माण का एक शक्तिशाली माध्यम भी है। मीडिया के माध्यम से प्रस्तुत विचार, विश्लेषण और विमर्श नागरिकों की



सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषयों पर मीडिया द्वारा की गई प्रस्तुति जनता की मानसिकता और प्रतिक्रिया को दिशा देती है। यदि मीडिया संतुलित, तथ्यपरक और राष्ट्रहितपरक दृष्टिकोण अपनाता है, तो यह सामाजिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करता है। इसके विपरीत, यदि मीडिया सनसनीखेज, पक्षपातपूर्ण या अपुष्ट सूचनाओं पर आधारित रिपोर्टिंग करता है, तो यह भय, अविश्वास और अस्थिरता को बढ़ावा दे सकता है। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मीडिया को एक व्यापक अधिकार क्षेत्र प्रदान करती है। अनुच्छेद 19(1) के अंतर्गत प्रेस की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आधारशिला मानी जाती है। किंतु यह स्वतंत्रता निरंकुश नहीं है। राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और संप्रभुता की रक्षा के लिए इस पर युक्तिसंगत प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। अतः मीडिया को स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों में संवेदनशीलता, गोपनीयता और नैतिकता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार की लापरवाही देशहित के विरुद्ध न चली जाए।

इसके अतिरिक्त, मीडिया की भूमिका आपदा प्रबंधन और संकट काल में भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी, आतंकी हमले या सामाजिक अशांति की स्थिति में मीडिया त्वरित सूचना प्रदान कर राहत एवं बचाव कार्यों में सहयोग करता है। सही और समय पर दी गई जानकारी जनहानि को कम करने और संसाधनों के समुचित उपयोग में सहायक सिद्ध होती है। हाल के वर्षों में कोविड-19 महामारी के दौरान मीडिया ने स्वास्थ्य जागरूकता, सरकारी दिशा-निर्देशों के प्रसार और सामाजिक जिम्मेदारी के निर्वहन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। हालाँकि, मीडिया की भूमिका केवल सकारात्मक ही नहीं रही है। कई अवसरों पर मीडिया की गैर-जिम्मेदाराना रिपोर्टिंग ने राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक सौहार्द के लिए गंभीर समस्याएँ उत्पन्न की हैं। लाइव कवरेज के दौरान सुरक्षा बलों की रणनीतिक जानकारी का प्रसारण, आतंकवादी घटनाओं को सनसनीखेज रूप में प्रस्तुत करना, अफवाहों को बढ़ावा देना और पक्षपातपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करना ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाया है। अतः यह आवश्यक है कि मीडिया संस्थान स्वनियमन, नैतिक आचार संहिता और पेशेवर मूल्यों का कठोरता से पालन करें।

इस परिप्रेक्ष्य में, मीडिया साक्षरता का महत्व भी अत्यंत बढ़ जाता है। नागरिकों को यह समझना आवश्यक है कि वे किस प्रकार की सूचनाओं का उपभोग कर रहे हैं और उनकी प्रामाणिकता क्या है। मीडिया साक्षरता समाज को दुष्प्रचार और फेक न्यूज से बचाने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है। इसमें शैक्षिक संस्थानों, नागरिक संगठनों और स्वयं मीडिया की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। अंततः यह



कहा जा सकता है कि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होने के नाते मीडिया की भूमिका केवल सूचना संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक स्थिरता और लोकतांत्रिक सुदृढता का एक अनिवार्य आधार है। परंपरागत और गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के युग में मीडिया की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। एक संतुलित, निष्पक्ष, जिम्मेदार और राष्ट्रहितपरक मीडिया ही लोकतंत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच समन्वय स्थापित कर सकता है। इसी संतुलन के माध्यम से एक सशक्त, सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र की परिकल्पना साकार की जा सकती है। वर्ष 2024 में सुमना वर्मा एवं मौलिश्री शुक्ला द्वारा प्रकाशित शोध लेख में भारत की आंतरिक सुरक्षा पर सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव का व्यापक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि सोशल मीडिया जहाँ एक ओर लोकतांत्रिक संवाद, नागरिक सहभागिता और सूचना के त्वरित आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम बन चुका है, वहीं दूसरी ओर यह दुष्प्रचार, कट्टरपंथ, अफवाह, साइबर अपराध और सामाजिक विभाजन का प्रमुख स्रोत भी बन गया है। लेखकों के अनुसार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आतंकवादी संगठनों, अलगाववादी समूहों और असामाजिक तत्वों द्वारा भर्ती, प्रचार और मानसिक युद्ध के लिए उपयोग किए जा रहे हैं। यह स्थिति राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती उत्पन्न करती है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि मीडिया साक्षरता, तथ्य-जांच तंत्र और कड़े साइबर कानूनों के बिना इन खतरों को नियंत्रित करना संभव नहीं है। लेख मीडिया की जिम्मेदार भूमिका पर बल देता है, जिससे लोकतंत्र और सुरक्षा के बीच संतुलन बना रहे। सुनिता एवं डॉ. अनिता सामल द्वारा 2025 में प्रकाशित शोध भारत में साइबर सुरक्षा की स्थिति और मीडिया की भूमिका का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह पाया गया कि फिशिंग, रैनसमवेयर, साइबर जासूसी और डिजिटल दुष्प्रचार भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए प्रमुख गैर-परंपरागत खतरे बन चुके हैं। लेख में यह भी बताया गया है कि डिजिटल मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म फेक न्यूज और सूचना युद्ध के प्रमुख उपकरण बन गए हैं, जिससे सामाजिक तनाव और राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है। शोध के अनुसार मीडिया यदि तथ्य-आधारित रिपोर्टिंग, साइबर जागरूकता अभियान और जनशिक्षा को प्राथमिकता दे, तो राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ किया जा सकता है। अध्ययन भारत में सेंट्रल साइबर सिक्योरिटी अथॉरिटी की स्थापना और मीडिया-सुरक्षा सहयोग तंत्र विकसित करने की अनुशंसा करता है।

अध्ययन की आवश्यकता

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में मीडिया को चौथा स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि यह शासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करता है तथा पारदर्शिता, जवाबदेही और जनजागरूकता को बढ़ावा देता



है। आधुनिक युग में जब राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा केवल सैन्य रक्षा तक सीमित न रहकर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक आयामों तक विस्तारित हो गई है, तब मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। परंपरागत एवं गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के संदर्भ में मीडिया की भूमिका का अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है ताकि लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करते हुए राष्ट्रीय हितों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। वर्तमान समय में आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, संगठित अपराध, सांप्रदायिक तनाव और सीमा-पार घुसपैठ जैसी परंपरागत आंतरिक सुरक्षा समस्याएँ देश की स्थिरता और विकास के लिए गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। इन परिस्थितियों में मीडिया की निष्पक्ष, संतुलित और तथ्यपरक रिपोर्टिंग जनता को सही जानकारी प्रदान करती है और अफवाहों एवं भय के वातावरण को नियंत्रित करती है। मीडिया प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखकर उन्हें अधिक उत्तरदायी बनाता है, जिससे लोकतांत्रिक शासन प्रणाली सुदृढ़ होती है। अतः इन चुनौतियों के संदर्भ में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण नीति-निर्माण और प्रशासनिक सुधार की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है।

गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ जैसे साइबर अपराध, डिजिटल आतंकवाद, फेक न्यूज, सूचना युद्ध और सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाला दुष्प्रचार आधुनिक युग की नई समस्याएँ हैं, जिनका प्रभाव समाज की मानसिकता और वैचारिक संरचना पर पड़ता है। इन चुनौतियों से निपटने में मीडिया की भूमिका और अधिक संवेदनशील हो जाती है। मीडिया सत्यापित सूचनाओं के माध्यम से समाज को जागरूक करता है तथा नागरिकों में विवेकपूर्ण सोच विकसित करता है। इस संदर्भ में मीडिया की भूमिका का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार जिम्मेदार पत्रकारिता इन खतरों को नियंत्रित कर सकती है और किस प्रकार गैर-जिम्मेदार रिपोर्टिंग राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संकट उत्पन्न कर सकती है।

लोकतंत्र में मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि जनमत निर्माण का एक शक्तिशाली उपकरण भी है। राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषयों पर मीडिया द्वारा प्रस्तुत विचार, विश्लेषण और विमर्श नागरिकों की सोच और दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं। संतुलित और राष्ट्रहितपरक प्रस्तुति सामाजिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करती है, जबकि पक्षपातपूर्ण और सनसनीखेज रिपोर्टिंग सामाजिक तनाव और अस्थिरता को जन्म दे सकती है। अतः मीडिया की भूमिका का अध्ययन इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक विमर्श को स्वस्थ, सकारात्मक और राष्ट्रहितोन्मुख बनाए रखा जा सके। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मीडिया को व्यापक अधिकार प्रदान करती



है, किंतु इसके साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था और सामाजिक नैतिकता की रक्षा हेतु कुछ युक्तिसंगत प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। इस संतुलन को बनाए रखना मीडिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस विषय का अध्ययन यह समझने में सहायक होता है कि किस प्रकार मीडिया स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बीच संतुलन स्थापित कर सकता है, ताकि न तो लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन हो और न ही राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किया जाए।

डिजिटल मीडिया और सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म के विस्तार ने सूचना के प्रवाह को अत्यंत तीव्र बना दिया है। इससे जहाँ पारदर्शिता और त्वरित सूचना उपलब्धता बढ़ी है, वहीं दुष्प्रचार और अफवाहों का प्रसार भी सरल हो गया है। आम नागरिक कई बार भ्रामक सूचनाओं के प्रभाव में आकर गलत निर्णय ले लेते हैं, जिससे सामाजिक तनाव और अव्यवस्था उत्पन्न हो सकती है। इस संदर्भ में मीडिया साक्षरता और जिम्मेदार पत्रकारिता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। मीडिया की भूमिका का अध्ययन नागरिकों में विवेकपूर्ण सूचना उपभोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए भी आवश्यक है। राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का सामूहिक दायित्व है। मीडिया जन-जागरूकता के माध्यम से नागरिकों को उनकी जिम्मेदारियों का बोध कराता है और राष्ट्रहित में सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित करता है। आतंकवाद विरोधी अभियान, साइबर सुरक्षा जागरूकता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से मीडिया समाज को अधिक सजग और उत्तरदायी बनाता है। इस दृष्टि से मीडिया की भूमिका का अध्ययन सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रभावी निर्वहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समग्र रूप से देखा जाए तो परंपरागत एवं गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के संदर्भ में मीडिया की भूमिका का अध्ययन वर्तमान समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में सहायक है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, सामाजिक समरसता के संवर्धन, जन-जागरूकता के विस्तार और नीति निर्माण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। इसलिए इस विषय का अकादमिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्व है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में प्रभावी भूमिका

लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तंभ इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह शासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करता है। मीडिया राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर जन-जागरूकता फैलाकर नागरिकों को सजग बनाता है। आतंकवाद, उग्रवाद, साइबर अपराध और फेक न्यूज जैसे खतरों के प्रति मीडिया द्वारा दी गई सूचनाएँ जनता को सतर्क करती हैं और राष्ट्रहित में सोच विकसित करती हैं। मीडिया प्रशासन



और सुरक्षा एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर निगरानी रखकर पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करता है, जिससे शासन प्रणाली अधिक प्रभावी बनती है। विभिन्न अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि जब मीडिया निष्पक्ष, संतुलित और तथ्यपरक रिपोर्टिंग करता है, तब सामाजिक स्थिरता और राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि मीडिया लोकतांत्रिक व्यवस्था में राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में प्रभावी भूमिका निभाता है।

गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों, विशेषकर फेक न्यूज और साइबर अपराध, के नियंत्रण में मीडिया की भूमिका

डिजिटल युग में फेक न्यूज, साइबर अपराध और सूचना युद्ध जैसी गैर-परंपरागत चुनौतियाँ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन चुकी हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाली भ्रामक सूचनाएँ सामाजिक तनाव, सांप्रदायिक हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकती हैं। मीडिया द्वारा तथ्य-जांच, सत्यापित समाचारों का प्रसार और जन-जागरूकता अभियान इन खतरों को नियंत्रित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। कई शोध अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि जिम्मेदार पत्रकारिता और मीडिया साक्षरता कार्यक्रम फेक न्यूज के प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के नियंत्रण में मीडिया की भूमिका अत्यंत निर्णायक है।

संतुलित और जिम्मेदार मीडिया रिपोर्टिंग सामाजिक एकता एवं राष्ट्रीय स्थिरता को बढ़ावा

संतुलित और जिम्मेदार मीडिया रिपोर्टिंग समाज में विश्वास, सद्भाव और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करती है। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े संवेदनशील विषयों पर जब मीडिया तथ्यपरक, संयमित और राष्ट्रहितपरक दृष्टिकोण अपनाता है, तब सामाजिक तनाव और अफवाहों को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके विपरीत, सनसनीखेज और पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग समाज में भय, भ्रम और विभाजन उत्पन्न कर सकती है। विभिन्न सामाजिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि सकारात्मक मीडिया विमर्श सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है। अतः यह प्रमाणित होता है कि संतुलित और जिम्मेदार मीडिया रिपोर्टिंग सामाजिक एकता एवं राष्ट्रीय स्थिरता को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका केवल सूचना के प्रसार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक



स्थिरता और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करता है। परंपरागत तथा गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों के वर्तमान परिदृश्य में मीडिया की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि यह जनता और शासन के बीच संवाद का सशक्त माध्यम बनकर पारदर्शिता, जवाबदेही और जागरूकता को बढ़ावा देता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिक तनाव और संगठित अपराध जैसी परंपरागत आंतरिक सुरक्षा समस्याओं से निपटने में मीडिया की निष्पक्ष और संतुलित रिपोर्टिंग सामाजिक एकता को सुदृढ़ करती है तथा भय और अफवाहों के वातावरण को नियंत्रित करने में सहायक सिद्ध होती है। मीडिया द्वारा प्रस्तुत तथ्यपरक सूचनाएँ न केवल जनता को सही दिशा प्रदान करती हैं, बल्कि प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियों को अधिक उत्तरदायी बनाकर शासन व्यवस्था को सशक्त बनाती हैं। इस प्रकार मीडिया लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

गैर-परंपरागत आंतरिक सुरक्षा चुनौतियाँ, विशेषकर साइबर अपराध, फेक न्यूज और सूचना युद्ध, आधुनिक युग में अत्यंत गंभीर खतरे बन चुकी हैं। इन चुनौतियों के संदर्भ में मीडिया की भूमिका और भी अधिक संवेदनशील हो जाती है। तथ्य-जांच, जिम्मेदार रिपोर्टिंग और मीडिया साक्षरता अभियानों के माध्यम से मीडिया समाज को दुष्प्रचार और भ्रामक सूचनाओं से बचाने में सहायक सिद्ध होता है। इससे न केवल सामाजिक स्थिरता बनी रहती है, बल्कि लोकतांत्रिक विमर्श भी अधिक स्वस्थ और सकारात्मक बनता है। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि मीडिया की संतुलित, निष्पक्ष और राष्ट्रहितपरक भूमिका ही लोकतंत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित कर सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि मीडिया संस्थान व्यावसायिक दबावों से ऊपर उठकर नैतिक आचार संहिता और पेशेवर मूल्यों का पालन करें। साथ ही, नागरिकों में मीडिया साक्षरता का विकास और सरकार द्वारा पारदर्शी नीतियों का निर्माण इस दिशा में सहायक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार एक जिम्मेदार मीडिया न केवल लोकतंत्र को सुदृढ़ करता है, बल्कि एक सुरक्षित, स्थिर और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

उपसंहार

उपसंहार के रूप में यह कहा जा सकता है कि लोकतंत्र और राष्ट्रीय सुरक्षा की स्थिरता के बीच मीडिया का संतुलित और जिम्मेदार योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान युग में, जहाँ परंपरागत चुनौतियाँ जैसे आतंकवाद और उग्रवाद के साथ-साथ साइबर अपराध, फेक न्यूज और सूचना युद्ध जैसी



गैर-परंपरागत चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं, वहाँ मीडिया केवल सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, जन-जागरूकता और राष्ट्रहित की रक्षा का आधार बन गया है। मीडिया की निष्पक्ष, तथ्यपरक और संयमित रिपोर्टिंग लोकतंत्र की ताकत को बढ़ाती है और राष्ट्रीय सुरक्षा के संरक्षण में निर्णायक भूमिका निभाती है। यह अध्ययन इस बात को भी स्पष्ट करता है कि मीडिया की स्वतंत्रता के साथ-साथ नैतिक जिम्मेदारी का पालन भी अत्यंत आवश्यक है। जिम्मेदार पत्रकारिता और मीडिया साक्षरता के माध्यम से नागरिकों में विवेकपूर्ण सोच विकसित होती है और समाज में विश्वास, सद्भाव और सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। अंततः, एक सशक्त, जिम्मेदार और पारदर्शी मीडिया ही लोकतंत्र को सुदृढ़ करता है और राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि और स्थायित्व का आधार बनता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Munteanu, N. A. (2020). *The role of media in promoting national security interests*. Bulletin of the Transilvania University of Braşov, Series VII.
- Seshadri, S. (2023). *Role of media in national security strategy*. SSRN.
- Vision IAS. (n.d.). *Social media influencers' impact on national security*. Vision IAS current affairs.
- Rammehar & Sushil Kumar. (2023). भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका Innovative Research Thoughts.
- Khan, M. B. (2025). *Non-Traditional Security and the Role of Pakistani Media*. Competitive Research Journal Archive, 3(04), 29-44.
- Dash, S., Grover, R., Shekhawat, G., et al. (2021). *Insights into incitement: Dangerous speech on Twitter in India*.
- Bajwa, T. S. (2025). *Wartime media dynamics in emerging democracies: Case study of Pakistani media in May 2025 Indo-Pak conflict*.
- Fernandes, Y., & Abosata, N. (2024). *Analysing India's cyber warfare readiness and developing a defence strategy*.
- Lang Cheng & Ran Bao. (2022). *Media literacy and national security awareness*. Social Sciences & Humanities Open.



- International Journal of Humanities and Social Science Invention. (2018). राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का अवलोकनात्मक अध्ययन.
- Global Strategic & Security Studies Review. (2021). the effects of social media on national security: An overview. GSSSR Review.
- Vision IAS. (2018). *Role of media and social networking sites in internal security challenges*. Vision IAS PDF.
- *Freedom of the press in India*. (n.d.). Wikipedia.
- *National Media Analytics Centre*. (n.d.). Wikipedia.
- *An Analysis of the Causes and Implications of Media and National Security Disconnect in Ghana*. (2023). European Journal of Development Studies.